

سُورَةُ التَّكْوِيْرِ

Surah 81 — At-Takwir (The Overthrowing) · Meccan · 29 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ

जिस वक्त आफ़ताब की चादर को लपेट लिया जाएगा

2

وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ

और जिस वक्त तारे गिर पड़ेगें

3

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ

और जब पहाड़ चलाए जाएंगें

4

وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ

और जब अनक़रीब जनने वाली ऊंटनियों बेकार कर दी जाएंगी

5

وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ

और जिस वक्त वहशी जानवर इकट्ठा किये जायेंगे

6

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ

और जिस वक्त दरिया आग हो जायेंगे

7

وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ

और जिस वक्त रुहें हवियों से मिला दी जाएंगी

8

وَإِذَا الْمَوْءُودَةُ سُئِلَتْ

और जिस वक्त ज़िन्दा दर गोर लड़की से पूछा जाएगा

9

بِأَيِّ ذَنْبٍ؟ قَالَتْ

कि वह किस गुनाह के बदले मारी गयी

10

وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ

और जिस वक्त (आमाल के) दफ्तर खोले जाएं

11

وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ

और जिस वक्त आसमान का छिलका उतारा जाएगा

12

وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ

और जब दोज़ख (की आग) भड़कायी जाएगी

13

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُزْلِفَتْ

और जब बेहिश्त करीब कर दी जाएगी

14

عَلِمَتْ نَفْسٌ؟ مَا أَحْضَرَتْ

तब हर शख्स मालूम करेगा कि वह क्या (आमाल) लेकर आया

15

فَلَا أَقْسِمُ بِالْخُنُوسِ

तो मुझे उन सितारों की कसम जो चलते चलते पीछे हट जाते

16

الْجَوَارِ الْكُنَّسِ

और गायब होते हैं

17

وَاللَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ

और रात की कसम जब खत्म होने को आए

18

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ

और सुबह की कसम जब रौशन हो जाए

19

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ

कि बेशक ये (कुरान) एक मुअज़्ज़िज़ फरिश्ता (जिबरील की ज़बान का पैग़ाम है

20

ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ

जो बड़े क़वी अर्श के मालिक की बारगाह में बुलन्द रुतबा है

21

مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ

वहाँ (सब फरिश्तों का) सरदार अमानतदार है

22

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونٍ

और (मक्के वालों) तुम्हारे साथी मोहम्मद दीवाने नहीं हैं

23

وَلَقَدْ رَءَاهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ

और बेशक उन्होंने जिबरील को (आसमान के) खुले (शरक़ी) किनारे पर देखा है

24

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٍ[ۙ]

और वह ग़ैब की बातों के ज़ाहिर करने में बख़ील नहीं

25

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ[ۙ] رَّجِيمٍ[ۙ]

और न यह मरदूद शैतान का कौल है

26

فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ

फिर तुम कहाँ जाते हो

27

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ[ۙ] لِلْعَلَمِينَ

ये सारे जहाँ के लोगों के लिए बस नसीहत है

28

لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ

(मगर) उसी के लिए जो तुममें सीधी राह चले

29

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ

और तुम तो सारे जहाँ के पालने वाले खुदा के चाहे बग़ैर कुछ भी चाह नहीं सकते